Vol II Issue X

ISSN No : 2230-7850

Monthly Multidiciplinary
Research Journal

Indian Streams Research Journal

Executive Editor

Ashok Yakkaldevi

Editor-in-chief

H.N.Jagtap

Welcome to ISRJ

RNI MAHMUL/2011/38595 **ISSN No.2230-7850**

Indian Streams Research Journal is a multidisciplinary research journal, published monthly in English, Hindi & Marathi Language. All research papers submitted to the journal will be double - blind peer reviewed referred by members of the editorial Board readers will include investigator in universities, research institutes government and industry with research interest in the general subjects.

International Advisory Board

Flávio de São Pedro Filho
Federal University of Rondonia, Brazil

Kamani Perera
Regional Centre For Strategic Studies, Sri Lanka

Janaki Sinnasamy
Librarian, University of Malaya [Malaysia]

Romona Mihaila
Spiru Haret University, Romania

Delia Serbescu
Spiru Haret University, Bucharest, Romania

Anurag Misra
DBS College, Kanpur

Titus Pop

Mohammad Hailat
Dept. of Mathmatical Sciences, University of South Carolina Aiken, Aiken SC 29801

Abdullah Sabbagh
Engineering Studies, Sydney

Catalina Neculai
University of Coventry, UK

Ecaterina Patrascu
Spiru Haret University, Bucharest

Loredana Bosca
Spiru Haret University, Romania

Fabricio Moraes de Almeida
Federal University of Rondonia, Brazil

George - Calin SERITAN
Postdoctoral Researcher

Hasan Baktir
English Language and Literature Department, Kayseri

Ghayoor Abbas Chotana
Department of Chemistry, Lahore University of Management Sciences [PK]

Anna Maria Constantinovici
AL. I. Cuza University, Romania

Horia Patrascu
Spiru Haret University, Bucharest, Romania

Ilie Pintea,
Spiru Haret University, Romania

Xiaohua Yang
PhD, USA

Nawab Ali Khan
College of Business Administration

Editorial Board

Pratap Vyamktrao Naikwade
ASP College Devrukh,Ratnagiri,MS India

R. R. Patil
Head Geology Department Solapur University, Solapur

Rama Bhosale
Prin. and Jt. Director Higher Education, Panvel

Salve R. N.
Department of Sociology, Shivaji University, Kolhapur

Govind P. Shinde
Bharati Vidyapeeth School of Distance Education Center, Navi Mumbai

Chakane Sanjay Dnyaneshwar
Arts, Science & Commerce College, Indapur, Pune

Awadhesh Kumar Shirotriya
Secretary, Play India Play (Trust),Meerut

Iresh Swami
Ex - VC. Solapur University, Solapur

N.S. Dhaygude
Ex. Prin. Dayanand College, Solapur

Narendra Kadu
Jt. Director Higher Education, Pune

K. M. Bhandarkar
Praful Patel College of Education, Gondia

Sonal Singh
Vikram University, Ujjain

G. P. Patankar
S. D. M. Degree College, Honavar, Karnataka

Maj. S. Bakhtiar Choudhary
Director,Hyderabad AP India.

S.Parvathi Devi
Ph.D.-University of Allahabad

Sonal Singh

Rajendra Shendge
Director, B.C.U.D. Solapur University, Solapur

R. R. Yalikar
Director Managment Institute, Solapur

Umesh Rajderkar
Head Humanities & Social Science YCMOU, Nashik

S. R. Pandya
Head Education Dept. Mumbai University, Mumbai

Alka Darshan Shrivastava
Shaskiya Snatkottar Mahavidyalaya, Dhar

Rahul Shriram Sudke
Devi Ahilya Vishwavidyalaya, Indore

S.KANNAN
Ph.D , Annamalai University,TN

Satish Kumar Kalhotra

Address:-Ashok Yakkaldevi 258/34, Raviwar Peth, Solapur - 413 005 Maharashtra, India
Cell : 9595 359 435, Ph No: 02172372010 Email: ayisrj@yahoo.in Website: www.isrj.net

Indian Streams Research Journal
Volume 2, Issue.10,Nov. 2012
ISSN:-2230-7850

Available online at www.isrj.net

ORIGINAL ARTICLE

''उदय प्रकाश के कथा साहित्य का अनुशीलन''

प्रकाश भगवानराव षिंदे

यशवंत कॉलेज, नांदेड

सारांश :

समाज परिवर्तनशील है चूँकि परिवर्तन प्रकृति का अटूट नियम है। कहने की आवश्यकता नही कि इससे साहित्य भी अछूता रहा है। समकालीन परिवर्तनशील विश्व समाज को अत्यंत सूक्ष्म दृष्टि से प्रतिबिंबित करने में उदय प्रकाश जी का कथा साहित्य सफल सिद्ध हुआ है। प्रखर प्रतिभा के धनी उदय जी की कथा व्यापक धरातल को छूती और क्षितीज तक फैलती नजर आती है। वे साहित्य में कवि, कथाकार, निबंधकार, अनुवादक, चित्रकार, समीक्षक तथा फिल्म निर्माता के रुप में ख्याति प्राप्त है।

प्रस्तावना :

उदय प्रकाश जी का उदय छत्तीसगढ़ के 'सीतापुर' नामक गाँव में नववर्शारंभ अर्थात 1 जनवरी 1952 को हुआ । नववर्ष के साथ–साथ उदय जी ने सृष्टि पर कदम रखे जिनकी नवीनता का परिचय है उनका साहित्य । उदय प्रकाश ने अपने अनुठे अनुभवों से पाठकों तथा समीक्षकों पर ऐसी छाप डाली की जो मिटाने पर भी नहीं मिटती । उनके साहित्य का असर सालों तक लोगों के दिल को मथता रहेगा । उदय प्रकाश की साहित्य यात्रा कविता से आरंभ हुई जिसमें 'सुनो कारीगर', 'रात में हारमोनीयम', 'अबुतर–कबुतर', 'एक भाशा हुआ करती है' आदि । उनके कथा संग्रहों में 'दरियाई घोड़ा', 'तिरिछ', 'मैंगोसील', '...और अंत में प्रार्थना', 'पॉल गोमरा का स्कूटर', 'दत्तात्रेय के दुःख', 'अरेबा–परेबा', 'पीली छतरीवाली लड़की' और 'मोहन दास' प्रसिध्द हैं । प्रकाश जी ने कविता और कहानी के साथ–साथ निबंध और आलोचना तथा अनुवाद को भी अपने अभिव्यक्ति का माध्यम बनाया हैं । चर्चित साहित्यकार उदय जी ने अपने लेखन का आरंभ पत्रकारिता से किया किंतु वे स्वयं को पहले कवि ही मानते है, जैसे– ''मैं मूलतः कवि हूँ मुझे कहानीकार मानना कुछ वैसा ही है कि कुम्हार भी कपड़ा सिला दे और उसे दर्जी समझ लिया जाए ।[1]'' किंतु उदय प्रकाश को सर्वाधिक सफलता कहानिकार के रुप में मिली जिसका जीवंत उदाहरण है कहानी 'मोहन दास' जिसका विश्व की तेरह भाशाओं में अनुवाद हुआ हैं । 'मोहन दास' कहानी पर ही उन्हें 2010 में साहित्य अकादमी पुरस्कार से पुरस्कृत किया गया।

उदय जी के कथा साहित्य की कथावस्तु में प्रायः 'आम आदमी' को अधिक प्रश्रय मिला है। युवा आलोचक कृष्ण मोहन ने ठीक ही कहा है कि, ''उदय प्रकाश गुलामी से आजादी के दौर की निरंतरता का अथक चित्रण करते है। वे ऐसे कई सवाल उठाते है जो इस पूरी निरंतरता के बीच की राजनीति का प्रतिपक्ष खड़ा करते है।'' उनकी लंबी कहानी 'मोहन दास' में मोहन दास इसी राजनीति का शिकार बना है। इस कहानी की कथावस्तु मध्यप्रदेश के एक गाँव में रहनेवाले, गरीब, अभाव और दुःख से संत्रस्त मोहन दास नामक एक आदिवासी युवक की है। मोहन दास को कोलियरी कंपनी में नौकरी मिलती है, पर उसी गाँव का बिसनाथ नाम का एक फुटकर गुंडा उसके ;मोहन दासद्ध के नाम से इस नौकरी पर कब्जा कर लेता है और ऐश की जिंदगी जीने लगता है। इस कार्य में सफलता पाने हेतु बिसनाथ ने सभी प्रबंध कर रखे थे। बाद में जब असली मोहन दास को इसका पता चलता है तो वह अपना हक पाने के लिए बहुत संघर्ष करता है किंतु वही लोग उसे पागल ठहरा देते है जैसे, ''मोहन दास फिर दो–एक बार ओरियंटल कोल माइंस गया लेकिन वहाँ जाना व्यर्थ ही साबित हुआ क्यों कि वहाँ और लेनिन नगर में यह अफवाह फैला दी गई थी कि एक कोई सनकी हफ्ते–पखवाड़े यहाँ आता है और खुद को असली मोहन दास कहता है।[3]'' मोहन दास यहाँ हारता नही तो एक स्वयंसेवक की मदत से आदालत में जाता है। कार्रवाई शुरू होती है जिसमें उसे सफलता नही मिलती। उदय जी ने इस कहानी के माध्यम से समाज में कैसे सच को झुठ और झुठ को सच बनाने की आजकल की मशीनरी ने गति पकड़ी है इसे बड़ी खुबी से खोला है।

'तिरिछ' कहानी के द्वारा कथाकार ने गाँव और शहर का अंतर, अमानवीयता, संवेदनहीनता, तथा अपनी संस्कृति और सभ्यता को भूलते मानसिकता पर प्रहार किया। आज के समाज में व्याप्त आतंकमय संत्रास का प्रतीक 'तिरिछ' है। कहानी में तिरिछ विशैला जानवर है परंतु वह आज के मानव के अमानवीयता का परिचायक बनकर उभर आया है। पिता जी जब शहर जाते तो जान बचाने के लिए संघर्शरत पिता को शहर जीने नही देता, उनकी मदत करने की बजाए पागल ठहराकर उन्हें मारने दौड़ते है, कथाकार के शब्दों में ''उनकी मृत्यु मानसिक सदमें और अधिक रक्तस्त्राव के कारण हुई थी[4]।'' इससे स्पश्ट है कि आज मानवीयता समाज में तिल–तिल होकर मरने लगी है परंतु वैज्ञानिक युग में आज मानवीयता की आवश्यकता है।

'छप्पन तोले का करधन' कहानी में वृद्ध जीवन की यथार्थता को उजागर किया है। आज पुरानी पीढ़ी के प्रति नई पीढ़ी का उपेक्षा भाव बढ़ता जा रहा है और घर में यदि बुढ़े है तो वह हमें शत्रु प्रतित होते है जैसे, ''दादी हमारे घर की शत्रु[5] थी।'' दादी के प्रति परिवारवालों का देखने का नजरिया अलग था। चाची अक्सर कहा करती थी, ''निकली है आज बुढ़िया फिर से। घर में जरूर कोई–न–कोई बीमार पड़ेगा।'' अर्थात अपने ही घर में अपने ही लोगों द्वारा बुजुर्गों की यह स्थिति बन गई है। दादी को घर में रखने की सभी लोगों की मानसिकता यहीं है कि दादी के पास छप्पन तोले का करधन है लेकिन असलियत तो दादी और पिता जी ही जानते है। दादी कहती भी है कि, ''अभी तो बेटा, बहु दाल–भात ड्यौढ़ी पर रख जाती है, करधन मैंने दे दिया तो कौन–सी आस रह जाएगी ?करधन हो कि न हो, वह मेरे लिए और तुम सब की आस के लिए जरूरी है बेटा।''[7] आज हर आदमी लोभ और पूँजी के पीछे भाग रहा है जिसमें नाते, रिश्ते सब सुली पर चढ़ गए है।

'पॉल गोमरा का स्कूटर' एक मध्यमवर्गीय भारतीय हिंदी कवि रामगोपाल की कहानी है जिन्होंने अपना नाम बदलकर पॉल गोमरा रखा जिसके पीछे कारण है स्वयं की प्रसिद्धि। पॉल गोमरा अर्थात रामगोपाल में कल्पना है, भावना है, किंतु वह आज के बदलाव से कोसो दूर है

जिससे उन्हें किसी भी समारोह में आमंत्रित नहीं किया जाता। इस कहानी में उदय जी ने बाजारवादी संस्कृति पर भी प्रकाश डाला है कि कैसे कोई लड़की रातो–रात विज्ञापन और मीड़िया के जरीए प्रकाश में आती है। आज जो चमकीला है, जो बिकाऊ है वही बाजार में टिकता है जैसे, ''बाजार अब सभी चीजों का विकल्प बन चुका था, शहर, गाँव, कस्बे बड़ी तेजी से बाजार में बदल रहे थे। हर घर दुकान में तब्दिल हो रहा था। ... औरत बिकाऊ और मर्द कमाई का महान चकाचक युग आ गया था[8]।'' बाजार के साथ ही पुलिस की बर्बरता, अमानवीयता, हिंदी की स्थिति, शासन व्यवस्था का दोगलापन आदि को भी कथा में केंद्र बनाया है।

''...और अंत में प्रार्थना' कहानी डा. दिनेश मनोहर वाकणकर की ईमानदारी, कर्तव्यनिश्ठता, सेवाप्रियता और समर्पण आदि गुणों के कारण सबको प्रभावित करती है। यह कहानी शासन व्यवस्था की असलीयत की पोल खोलने में सक्षम है। डा. वाकरणकर आदिवासियों की सेवा करने के लिए अपने परिवार के विकास का बलिदान देते किंतु उनपर पुलिस, सिविल सर्जन, एस. पी, आदि सभी का दबाव रहता है कि तौफिक अहमद के पोस्टमार्टर की गलत रिपोर्ट दे। वाकणकर का चरित्र ऐसा है कि वह न नैतिकता को छोडते है और नही अपनी ईमानदारी। इस कहानी के माध्यम से उदय जी ने वर्तमान चिकित्सा व्यवस्था पर तिखा प्रहार किया है।

'पीली छतरीवाली लड़की' यह लंबी कहानी आज के बदलते हुए यथार्थ की पहचान है। इस कहानी की नायिका अंजली ब्राह्मण है और राहुल गैर ब्राह्मण जो एक दूसरे से प्रेम करते है किंतु राहुल ने अपनी जाती और पुष्तों का बदला अंजली से प्रेम कर लिया है। आलोचक नामवर सिंह का कथन है कि, ''पीली छतरीवाली लड़की महज एक प्रेम कथा नही है। गैर ब्राह्मण राहुल और ब्राह्मण मंत्री की बेटी अंजली जोशी के बीच प्रेम के माध्यम से उदय प्रकाश ने हमार समय के यथार्थ की विस्तार से पड़ताल की है।[9]'' लेखक ने इसमें वर्तमान शिक्षाव्यवस्था, राजनीति, जातियता, आदि की बर्बरता को प्रकाश में लाया है। विवेच्य कथाओं के अतिरिक्त 'दरियायी घोड़ा', 'अरेबा–परेबा', 'दत्तात्रेय के दुःख' आदि के माध्यम से उदय जी ने परिवार और समाज की मानसिकता का परिचय दिया है।

उदय प्रकाश के कथा साहित्य के पात्र या चरित्र यह 'आम आदमी' के है। 'मोहन दास' का मोहन दास संघर्शशील है तथा वह स्वयं की पहचान बनाना चाहता है। 'टेपचू' का टेपचू, '...और अंत में प्रार्थना' के डा. वाकणकर, 'तिरिछ' में पिता, 'पॉल गोमरा का स्कूटर' में रामगोपाल आदि सारे पात्र अपनी पहचान बनाने के लिए संघर्शरत है। डा. वाकणकर के संदर्भ में राजमणि शर्मा का कथन है कि, ''वह स्पश्टतः एक समस्याधर्मी नायक है जो एक गिरे हुए समाज में सच्चे एवं प्रामाणिक मूल्यों की खोज करती[10] है।'' अतः कहा जा सकता है कि उदय जी के कथा साहित्य में चरित्र व्यवस्था के विरोध में बिगुल बजाते हैं।

उदय प्रकाश के कथा साहित्य में संवाद सहज, सरल एवं पात्रानुकूल हैं। छोटे–छोटे संवादों से उन्होंने बड़े–बड़े प्रश्नों को उकेरा है। जैसे, ''मैं यह समझना चाहता हूँ कि क्या जो बेईमान नहीं है, वह व्यावहारिक नहीं हो सकती[11]।'' 'मोहन दास' का उदाहरण दृष्टव्य है, ''तुम किसका फ्लैट खोज रहे हो' ?

'सूर्यकांत का !
'उसके गाँव का नाम क्या है ?'
गढ़ाकोला।''[12]

अतः कहा जाएगा कि संवादों की योजना में उदय प्रकाश जी माहिर है।

उदय प्रकाश जी भाषा के खिलाड़ी है जिन्होंने बोलचाल की भाषा के साथ ग्रामीण पदों का प्रयोग किया है। उदय जी कथा शिल्प के माहिर है जिसे उन्होंने बारीके–बारीके से बनाया है। उनकी हर कहानी शिल्प के स्तर पर एक अलग प्रयोग करती है और हमारा ध्यान खिंचती है। वैसे देखा जाए तो कोई भी कार्य बिना प्रयोजन या बिना उद्देश्य के नहीं होता। उदय प्रकाश के कथा साहित्य का भी एक निहित उद्देश्य है कि वर्तमान समाज में फैली अमानवीयता, संवेदनहीनता और असभ्यता को कम करना। अपनी संस्कृति एवं सभ्यता की पहचान कराना तथा वर्तमान शिक्षा, राजनीति, शासन व्यवस्था में परिवर्तन लाना आदि। अतः कहा जाएगा कि उदय प्रकाश सशक्त कथाकार के रूप में हिंदी साहित्य में सर्वपरिचित है।

संदर्भ सूची

1.'दक्षिण समाचार' पत्र, 12 जनवरी 2011, पृ.सं. 10
2.'हंस', संपा. राजेंद्र यादव, जनवरी 2006 पृ.सं. 76
3.मोहन दास, उदय प्रकाश, पृ.सं. 45
4.तिरिछ, उदय प्रकाश, पृ.सं. 45
5.वही, पृ.सं. 51
6.वही, पृ.सं. 52
7.वही, पृ.सं. 59
8.पॉल गोमरा का स्कूटर, उदय प्रकाश, पृ.सं. 38
9.न्यूजब्रेक, 21 जनवरी 2001, पृ.सं. 47
10.दलित चेतना की कहानियाँ : बदलती परिभाशा, राजमणि शर्मा, पृ.सं. 47
11....और अंत में प्रार्थना, उदय प्रकाश, पृ.सं. 115
12.मोहन दास, उदय प्रकाश, पृ.सं. 43

Publish Research Article
International Level Multidisciplinary Research Journal
For All Subjects

Dear Sir/Mam,
We invite unpublished research paper.Summary of Research Project,Theses,Books and Books Review of publication,you will be pleased to know that our journals are

Associated and Indexed,India

- International Scientific Journal Consortium Scientific
- OPEN J-GATE

Associated and Indexed,USA

- Google Scholar
- EBSCO
- DOAJ
- Index Copernicus
- Publication Index
- Academic Journal Database
- Contemporary Research Index
- Academic Paper Databse
- Digital Journals Database
- Current Index to Scholarly Journals
- Elite Scientific Journal Archive
- Directory Of Academic Resources
- Scholar Journal Index
- Recent Science Index
- Scientific Resources Database

Indian Streams Research Journal
258/34 Raviwar Peth Solapur-413005,Maharashtra
Contact-9595359435
E-Mail-ayisrj@yahoo.in/ayisrj2011@gmail.com
Website : www.isrj.net